हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 06

* मीराबाई के केन्द्रीय भाव, कला पक्ष एवं भाव पक्ष का वर्णन करें।

मीराबाई ने कृष्ण को अपना आराध्य मानकर कविता करनेवाली मीरा की पदावलियाँ हिन्दी साहित्य के लिए अनमोल है। कृष्ण के प्रति मीरा की विरह वेदना सूरदास की गोपियों से कम नहीं है तभी तो सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है कि "मीराबाई राजपूताने के मरुस्थल की मन्दाकिनी है।" 'हेरी मैं तो प्रेम दीवाणी, मेरो दर्द न जाने कोय।' प्रेम दीवाणी मीरा का दर्द हिन्दी में सर्वत व्याप्त है।

मीरा के पदों का वैशिष्ट्य उनकी तीव्र आत्मानुभूति में निहित है। मीरा के काव्य का विषय है - श्री कृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम और भक्ति। मीरा ने प्रेम के मिलन (संयोग) तथा विरह (वियोग) दोनों पक्षों की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। श्री कृष्ण के प्रति प्रेम में मीरा किसी भी प्रकार की बाधा या यातना से विकल नहीं होती। लोक का

भय अथवा परिवार की प्रताड़ना दोनों का ही वे दृढ़ता के साथ सामना करती हैं।

कला पक्ष – मीरा की काव्य भाषा में विविधता दिखलाई देती है। वे कहीं शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग करती हैं तो कहीं राजस्थानी बोलियों का सम्मिश्रण कर देती हैं।

मीरा को गुजराती कवयित्री माना जाता है क्योंकि उनकी काव्य की भाषा में गुजराती पूर्वी हिन्दी तथा पंजाबी के शब्दों की बहुलता है पर इनके पदों का प्रभाव पूरे भारतीय साहित्य में दिखलाई देता है।

इनके पदों में अलंकारों की सहजता और योजना अद्भुत है जो सर्वत्र माधुर्य गुण से ओत-प्रोत हैं।

मीरा ने बड़े सहज और सरल शब्दों में अपनी प्रेम पीड़ा को कविता में व्यक्त किया है।

भाव पक्ष :– मीरा भक्तिकालीन कवयित्री थी, सगुण भक्ति धारा में कृष्ण को आराध्य मानकर इन्होंने कविताएँ की।

गोपियों के समान मीरा भी कृष्ण को अपना पति मानकर माधुर्य भाव से उनकी उपासना करती रही।

मीरा के पदों में एक तल्लीनता, सहजता और आत्मसमर्पण का भाव सर्वत्र विद्यमान है।

मीरा ने कुछ पदों में रैदास को गुरु रूप में स्मरण किया है तो कहीं-कहीं तुलसीदास को अपने पुत्रवत स्नेह पात्र बताया है। मीराबाई ने लज्जा और परंपरा को त्याग कर अनूठे प्रेम और भक्ति का परिचय दिया।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)

राम नारायण महाविद्यालय हाजीपुर (BRABU MUZAFFARPUR)

मो० नं० - 8292227104 ।

ईमेल - benamkumar213@gmail.com

दिनांक
19/09/2020